16. १००८ श्री शान्तिनाथ जी

वक्ष
गरुड

चिन्ह
हिरण

वर्ण
पीतवर्ण

यक्षिणी
मानसी

अर्घ

वसु द्रव्य संवारी, तुम ढिग धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी करुणाधारी, यातैं थारी शरनारी।।
श्री शांति जिनेशं, नुत नाकेशं, वृष चक्रेशं शक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भाद्रपद कृष्णा-७

गर्भकल्याणक

ज्येष्ठ कृष्णा-१४

जन्मकल्याणक

ज्येष्ठ कृष्णा-१४

तपकल्याणक

पौष शुक्ला-१०

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री विश्वसेन
माता: एरादेवी

मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

ज्येष्ठ कृष्णा-१४

मोक्षकल्याणक